हिंदी विभाग
विश्वभारती, शांतिनिकेतन
पश्चिम बंगाल – 731235

पीएचडी कोर्स वर्क
कोर्स कोड : Ph.D.120

पाठ्यक्रम विवरणिका

(शैक्षणिक सत्र : जुलाई, 2025 से आरंभ)

प्रस्तावना हिन्दी में पीएच॰ डी॰ कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हिन्दी भाषा, साहित्य संस्कृति की गहरी समझ प्रदान करते हुए गहन अनुसंधान की दिशा में प्रेरित करना है। वर्त्तमान वैश्विक संदर्भ में हमें ऐसे विवेकवान, संवेदनशील और सांस्कृतिक तौर पर अपने जमीन से सम्बद्ध आलोचनात्मक दृष्टिकोण से युक्त शोधार्थियों की आवश्यकता है, जो समाज में व्याप्त नकारात्मक प्रवृत्तियों के विरुद्ध समानता, न्याय और बन्धुत्व की भावना को सशक्त बना सके। साहित्य का अध्ययन न केवल मानवीय चेतना का विस्तार करता है, बल्कि इसमें निहित मूल्यों के माध्यम से मानवीयता और नैतिकता को दृढ़ता से स्थापित भी करता है। इस पाठ्यक्रम में उपलब्ध विकल्पों की बहुलता शोधार्थियों को अपने मनोनुकूल विधा और विषय के चयन की स्वतंत्रता प्रदान करता है। प्रस्तावित पाठ्यक्रम मध्यकालीन कविता से लेकर आधुनिक कविता तक को चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। पाठ्यक्रम के दायरे का विस्तार कथा साहित्य, नाटक, रंगमंच और कथेतर विधाओं तक किया गया है। लोक साहित्य से लेकर तुलनात्मक साहित्य तक को अलग कोर्स वर्क के तौर पर विकसित किया गया है। वैचारिकी और अवधारणा आधारित पाठ्यक्रमों को विशेष तौर पर तैयार किया गया है। पीएच डी कोर्स वर्क में सम्मिलित प्रत्येक वैकल्पिक कोर्स शोधार्थियों को अपनी रूचि और अनुसंधान की प्रवृत्ति के अनुसार विषय चयन की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

उद्देश्य इस पीएच डी कोर्स का प्रमुख उद्देश्य शोधार्थियों को हिन्दी विषय में गहन शोध के लिए प्रेरित करना है। पाठ्यक्रम की परिकल्पना कुछ इस ढंग से की गयी है कि अवधारणाओं, संकल्पनाओं, प्रवृत्तियों के विकास की ऐतिहासिकता और सामाजिकता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी अपने शोध की संभावित दिशाओं का संधान कर सकें तथा अपने संधान के मूल में भारतीय चिंतन पद्धतियों को एक संदर्भ के तौर पर वे अवश्य शामिल करें। तुलनात्मकता और अन्तर्ज्ञानानुशासनात्मकता को अनिवार्यतः वे अपने शोध प्रविधि का हिस्सा बनायें, इसका विशेष ध्यान रखा गया है। नये विमर्शों और चिंतन के नये गवाक्ष खुलने के साथ ही हिन्दी साहित्येतिहास के कई हिस्से अब समस्यामूलक हो गये हैं, नये तथ्यों के आलोक में अब उन स्थापनाओं को नये सिरे से जाँचने की जरुरत पैदा हो गयी है। उन नये विमर्शों को भी पाठ्यक्रम में शामिल करके इसे अद्यतन किया गया है। आनेवाले वक्त में विश्वभारती के हिन्दी विभाग में किये जाने वाले शोध हिन्दी भाषी प्रदेशों की अकादमिक आवश्यकता को पूर्ण करनेवाले साबित होंगे।

परिणाम इस कोर्स के अध्ययन एवं शिक्षण के उपरांत निम्न संभावित परिणाम की प्रत्याशा हैः–

विश्वभारती का हिन्दी विभाग मध्यकालीन धर्म साधना का केन्द्र रहा है। एक पत्र केवल मध्यकालीन हिन्दी कविता पर केन्द्रित रखा गया है, इसमें मध्यकालीनता के नये पहलुओं पर केन्द्रित शोध को बढ़ावा देने की योजना है। इससे मध्यकालीन धर्म साधना के केन्द्र के रूप में विश्वभारती के हिन्दी विभाग की स्वतंत्र पहचान और सुदृढ़ होगी तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के एक विशिष्ट केन्द्र के तौर पर हिन्दी विभाग को स्थाापित किया जा सकेगा।

शोधार्थी हिन्दी के अकादमिक क्षेत्र में अपना योगदान दे पाने में सक्षम हो सकेंगे। शोध के लिए संभावित विषय और समस्या का चुनाव करते हुए वे अकादमिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर पायेंगे।

विभिन्न पीएच डी कोर्स के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी ऐच्छिक विषय एवं विधा की विशेषज्ञता अर्जित करते हुए अपनी रुचि के विषय में शोध करने हेतु समर्थ हो सकेंगे। इसमें शामिल अलग–अलग कोर्स शोधार्थियों को शोध की नयी दिशा की ओर उन्मुख करेंगे।

पाठ्यक्रम के निर्माण में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि शोधार्थियों में एक प्रचलित समझदारी से बेहतर अवबोध को विकास हो सके और उनका शोध हिन्दी के अकादमिक आवश्यकता की पूर्ति में सहायक हो।

आधुनिक हिन्दी कविता के विभिन्न काव्यांदोलनों और उससे जुड़ी प्रवृत्तियों का संधान कर सकेंगे साथ ही उसका संबंध तत्कालीन ऐतिहासिक सन्दर्भों से जोड़ कर उसकी व्याख्या कर सकेंगे।

आधुनिक हिन्दी कहानी और उपन्यास के उद्‌भव और विकास की वैचारिकी और पारिस्थितिकी के विस्तृत अध्ययन के उपरांत शोधार्थी कथा साहित्य के किसी भी दौर पर शोध करने में समर्थ हो सकेंगे।

बंगाल में थियेटर की समृद्ध और जीवंत परम्परा को देखते हुए नाटक और रंगमंच पर शोध के इच्छुक शोधार्थियों के लिए शास्त्रीय से लेकर अधुनातन समकालीन रंगमंचीय विमर्श और प्रयोगों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाते हुए शोध की प्रचुर संभावना निर्मित की गयी है।

समकालीन संदर्भों में शोध की बढ़ती प्रवृति को ध्यान में रखते हुए हिन्दी के कथेतर गद्य पर शोध के लिए विस्तृत विकल्प उपलब्ध कराये गये हैं। इससे विश्वभारती के हिन्दी विभाग के शोधार्थियों को विषय चयन का एक बड़ा दायरा उपलब्ध हो सकेगा।

बंगाल में लोक की समृद्ध विरासत को देखते हुए लोक साहित्य और तुलनात्मक साहित्य को शोध का अभिन्न अंग बनाया गया है। यह हिन्दी साहित्य और बंगला साहित्य तथा अन्य भाषाओं के लोक साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में मददगार साबित होगा।

भाषा विज्ञान पर केन्द्रित पत्र शोधार्थियों में हिन्दी भाषा की प्रकृति, ध्वन्यात्मकता, संरचना और भाषा की मूलभूत समझ को सुस्पष्ट करनेवाला साबित होगा। इसके अध्ययन से शोधार्थी न केवल भाषा की व्यावहारिक और सैद्धांततिक दक्षता अर्जित कर पायेंगे अपितु प्रभावी संप्रेषण कौशल का भी विकास कर पायेंगे।

शिक्षण–प्रशिक्षण विधियाँ

इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा व्याख्यान, समूह–चर्चा, विषय आधारित संगोष्ठियाँ, वाद–विवाद, आशु परिचर्चा, आलेख पाठ, सिनेमा और डाक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग, फील्ड ट्रीप, आईसीटी ट्रेनिंग, पुस्तक समीक्षा तथा लिखित परीक्षा व मौखिक प्रस्तुतियों तथा शिक्षण–अभ्यासात्मक गतिविधियों को समेकित रुप से सम्मिलित किया जायेगा, जिससे अध्ययन–अध्यापन का अनुभव अधिक प्रभावशाली और समृद्ध बन सके।

पाठ्यक्रम विवरणिका :– यह पाठ्यक्रम वर्ष 2025 के प्रथम सेमेस्टर से लागू किया जायेगा। पाठ्यक्रम की संरचना, प्रश्नपत्रों के प्रारूप तथा अंक विभाजन में आवश्यक एवं उपयुक्त संशोधन किए गए हैं। इसके साथ ही प्रस्तावित संदर्भ और सहायक ग्रन्थों की सूची को भी अद्यतन किया गया है। पीएच डी का पाठ्यक्रम

शुरुआती प्रथम वर्ष में तीन हिस्से में विभाजित होगा। कोर्स –1 में शोध प्रविधि की पढ़ाई होगी और कोर्स – 2 के रूप 10 वैकल्पिक पत्रों में से किसी एक का चयन शोधार्थी को करना होगा एवं कोर्स – 3 के रूप में शोध पत्र प्रस्तुतिकरण, किसी आलोचनात्मक/शोधात्मक कृति (विगत 10 वर्षों में प्रकाशित) की समीक्षा और अपने शोध विषय से संबंधित शोध प्रारूप (Synopsis) प्रस्तुत करना होगा।

परीक्षा संरचना एवं अंक विभाजन

कोर्स – 1 और कोर्स – 2

कुल अंक **: 100**
आंतरिक मूल्यांकन : 20 अंक
मुख्य परीक्षा : 80 अंक
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (3×16) : 48 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न (4×8) : 32 अंक
मुख्य परीक्षा की अवधि : 4 घंटे

कोर्स – 3

कुल अंक **: 100**
पुस्तक समीक्षा : 40
शोध प्रारूप : 40
साक्षात्कार : 20

पत्र संख्या	शीर्षक	क्रेडिट
कोर्स – 1	शोध प्रविधि एवं तकनीकें (Researc Methodolog & Techniques)	4
कोर्स – 2	वैकल्पिक	
कोर्स – 2	मध्यकालीन हिन्दी कविता	4
कोर्स – 2	आधुनिक हिन्दी कविता	4
कोर्स – 2	कथा साहित्य	4
कोर्स – 2	नाटक और रंगमंच	4
कोर्स – 2	हिन्दी का कथेतर गद्य	4
कोर्स – 2	अवधारणात्मक हिन्दी आलोचना	4
कोर्स – 2	लोक साहित्य	4
कोर्स – 2	तुलनात्मक साहित्य	4
कोर्स – 2	भाषा विज्ञान एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी	4
कोर्स – 2	साहित्यिक मत एवं विमर्श	4
कोर्स – 3	पुस्तक समीक्षा एवं शोध प्रस्तावना प्रारूप प्रस्तुतिकरण	4

कोर्स – 1 शोध प्रविधि एवं तकनीक

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी शोध प्रविधि और शोध की तकनीकों के विविध पहलुओं से परिचित हो सकेंगे एवं शोध समस्या, शोध परिकल्पना, शोध विषय के निर्धारण की प्रक्रिया को समझ सकेंगे। साथ ही शोध की तकनीकी बारीकियों को जान कर शोध ग्रंथ लेखन में उसका अनुप्रयोग कर सकेंगे।

पाठ्य विषय :–

1. शोध : अर्थ एवं स्वरूप, मूलभूत विशेषताएँ
2. शोध प्रविधि : परिभाषा, पद्धति एवं प्रकार
3. शोधार्थी एवं शोध निदेशक : मूलभूत अर्हताएँ
4. शोध विषय की परिकल्पना, शोध विषय का चयन, विषय निर्धारण, विषय परिसीमन
5. शोध सामग्री : स्त्रोत एवं संकलन, नोट कार्ड्स, दस्तावेजीकरण की विभिन्न शैलियाँ
6. शोध प्रस्ताव की रुपरेखा : शोध प्रश्न, शोध–समस्या, शोध परिप्रेक्ष्य
7. अध्यायों का वर्गीकरण, पाद टिप्पणी, उद्धरण, उपसंहार, शोध सारांशिका, आधार ग्रन्थ, सन्दर्भ ग्रन्थ
8. पुस्तकालय एवं आनलाईन आर्काइव का उपयोग एवं प्रयुक्ति
9. अंतिम प्रारुप एवं टंकण, कम्प्यूटर अनुप्रयोग

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. शोध : स्वरूप एवं मानक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली,
2. शोध प्रविधि, विनयमोहन शर्मा, मयूर प्रकाशन, दिल्ली
3. शोध प्रविधि, मैथिली प्रसाद भारद्वाज, आधार प्रकाशन, हरियाणा
4. हिन्दी शोधतंत्र की रुपरेखा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
5. MLA Handbook, 8th edition, The modern languageassociation of America, New York, 2016
6. Academic and research writing (A Coursebook for Undergraduates and research students), Kalyani Samantray, Orient BlackSwan

कोर्स : 2 वैकल्पिक : मध्यकालीन हिन्दी कविता

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी मध्यकालीन बोध के स्वरूप और मध्यकालीनता के विविध पहलुओं से परिचित होते हुए भारतीय मध्ययुग की ऐतिहासिक विशिष्टताओं से परिचित हो सकेंगे। भारतीय साहित्य में मध्यकालीन साहित्य की सार्थकता को रेखांकित कर पायेंगे।

पाठ्य विषय :—

1. मध्यकालीन बोध का स्वरूप
2. भक्तिकाल का उद्भव और विकास एवं तद्विषयक धारणायें, भक्तिकाव्य और उसका सामाजिक—आर्थिक आधार।
3. लोकजागरण, देशज आधुनिकता और स्वर्णकाल की अवधारणा के आईने में भक्तिकाव्य।
4. निर्गुण और सगुण भक्ति काव्य का दार्शनिक और वैचारिक आधार
5. भक्तिकाल का अवसान और रीतिकाल के अभ्युदय की विवेचना
6. रीतिकाव्य : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, वैशिष्ट्य और विडम्बना
7. लक्षणग्रंथों की उपादेयता, रीतिकालीन आचार्यों का आलोचना साहित्य

संदर्भ ग्रन्थ :—

1. हजारीप्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन बोध का स्वरूप, पब्लिकेशन ब्यूरो, चंडीगढ़
2. डॉ॰ परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की संत परम्परा, इलाहाबाद
3. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन, धर्म और राज्य का स्वरूप, ग्रंथशिल्पी, नयी दिल्ली
4. इरफान हबीब, भारतीय इतिहास में मध्यकाल, ग्रंथशिल्पी, नयी दिल्ली
5. इरफान हबीब, मध्यकालीन भारत में प्रौद्योगिकी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
6. प्रेमशंकर : भक्तिकाव्य की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. चौथीराम यादव : लोकजागरण के सूत्रधार, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
8. नित्यानंद तिवारी : मध्यकालीन साहित्य पुनरावलोकन, साहित्य भंडार, इलाहाबाद
9. पुरुषोत्तम अग्रवाल :अकथ कहानी प्रेम की, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
10. कँवल भारती : भक्ति आंदोलन और निर्गुण क्रांति, स्वराज प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. प्रभाकर सिंह : रीतिकाव्य मूल्यांकन के नये आयाम, साहित्य भंडार, इलाहाबाद
12. भगीरथ मिश्र : हिन्दी रीति साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

कोर्स : 2 वैकल्पिक : आधुनिक हिन्दी कविता

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी आधुनिक हिन्दी कविता के विकास की ऐतिहासिक परिस्थितियों से अवगत हो सकेंगे। इसके साथ ही उन परिस्थितियों के प्रभाव से विकसित होने वाली आधुनिक हिन्दी कविता के प्रवृत्तियों और विविध काव्य आंदोलनों के विकास की क्रमिकता का ज्ञान अर्जित कर पायेंगे।

पाठ्य विषय :–

1. आधुनिक काल के आगमन की परिस्थितियाँ, आधुनिक भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, नवजागरणकालीन हिन्दी कविता
2. छायावाद का जातीय वैशिष्ट्य
3. प्रगतिवाद का उद्भव और विकास : भारतीय और पाश्चात्य संदर्भ
4. प्रयोगवाद : सन्दर्भ और औचित्य
5. नयी कविता : बिम्ब, प्रतीक और लघु मानव विषयक बहसें
6. अकविता : भावभूमि और सौन्दर्य दृष्टि
7. समकालीन कविता : क्रमिक विकास एवं वैशिष्ट्य
8. इक्कीसवीं सदी की कविता

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, ना॰प्र॰स॰, वाराणसी
2. श्रीकृष्ण लाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, हिन्दी परिषद् प्रकाशन विश्वविद्यालय, प्रयाग
3. कृष्णमुरारी मिश्र, रोमांटिक युगीन अंग्रेजी कविता और छायावाद, प्रगति प्रकाशन, आगरा
4. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
5. डॉ॰ देवराज, छायावाद का पतन,
6. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, समकालीन हिन्दी कविता,
7. रमेशचन्द्र शाह, छायावाद की प्रासंगिकता, वाग्देवी प्रकाशन
8. नामवर सिंह, कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
9. रामधारी सिंह दिनकर, कविता और शुद्ध कविता, लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली
10. विजयदेवनारायण साही, छठवाँ दशक, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
11. रामविलास शर्मा, नयी कविता और अस्तित्ववाद, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

कोर्स : 2 वैकल्पिक : कथा साहित्य

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी हिन्दी कथा साहित्य की समृद्ध परम्परा के विकास, वैचारिकी और प्रवृत्ति से अवगत हो सकेंगे। कहन की भारतीय और पाश्चात्य परम्परा से परिचित हो सकेंगे साथ ही उनके विकास में समकालीन और ऐतिहासिक परिस्थितियों की क्या भूमिका रही है, इसका भी बोध अर्जित कर

पाठ्य विषय :–

1. हिन्दी कहानी का आरंभ और विकास : प्रवृतिमूलक अध्ययन
2. विभिन्न कहानी आंदोलनों की वैचारिकी : नयी कहानी, अकहानी, समांतर कहानी, सचेतन कहानी,
3. साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी, जनवादी कहानी
4. भूमंडलीकरण के दौर की कहानी, युवा पीढ़ी की कहानी
5. मध्यवर्ग का उदय और हिन्दी उपन्यास, यथार्थवाद और हिन्दी उपन्यास
6. विभाजन और हिन्दी उपन्यास, लोकतन्त्र की कसौटी और हिन्दी उपन्यास
7. भारतीय आख्यान परम्परा और हिन्दी उपन्यास
8. कालजयिता का सवाल और हिन्दी उपन्यास,
9. अस्मितामूलक विमर्श और हिन्दी उपन्यास

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. भवदेव पाण्डेय(सं॰), हिन्दी कहानी का पहला दशक, रे माधव प्रकाशन, नयी दिल्ली
2. सुरेन्द्र चौधरी, हिन्दी कहानी प्रक्रिया और पाठ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. सुरेन्द्र चौधरी, हिन्दी कहानी रचना और परिस्थिति, अंतिका प्रकाशन, नयी दिल्ली
4. नामवर सिंह, कहानी नयी कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. देवीशंकर अवस्थी, नयी कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति, राजकमल
6. विजयमोहन सिहं, कथा समय, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. संजीव कुमार, हिन्दी कहानी की इक्कीसवीं सदी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
8. राहुल सिंह, हिन्दी कहानी : अंतर्वस्तु का शिल्प, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
9. राकेश बिहारी, केन्द्र में कहानी, शिल्पायन प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली
10. संतोष चौबे(सं॰), आख्यान का आंतरिक संकट, आईसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल
11. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
12. मैनेजर पाण्डेय, उपन्यास और लोकतन्त्र, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
13. अरुण प्रकाश, उपन्यास के रंग, अंतिका प्रकाशन, नयी दिल्ली
14. राजेन्द्र यादव, अठारह उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
15. वीरेन्द्र यादव, उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, राजकमल प्रकाशन
16. वीरेन्द्र यादव, उपन्यास और देस, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली
17. राहुल सिंह, अंतर्कथाओं के आइने में हिन्दी उपन्यास, भारतीय ज्ञानपीठ
18. Meenakshi Mukherjee, Realism and Reality : The novel and society in India, oxford university press, New Delhi
19. V.Ramakrishnan (ed.), Narrating India : The novel in the search of the Nation, Sahitya Akademi, New Delhi
20. Milan Kundera, The art of novel, Faber and Faber, Great Britain

कोर्स : 2 वैकल्पिक : नाटक और रंगमंच

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी भारत में नाट्य परम्परा के आरंभ और उसके विकास के विविध सोपानों से परिचित हो सकेंगे। उन अलग चरणों में हिन्दी नाट्य परम्परा में किन वैशिष्ट्य का विकास हुआ, शोधार्थी इसका अवबोध विकसित कर पायेंगे। साथ ही इन सबका क्या प्रभाव इक्कीसवीं सदी के हिन्दी नाटकों

पाठ्य विषय :–

1. नाटक : अवधारणा और सैद्धांतिकी (भारतीय और पाश्चात्य)
2. पारसी थियेटर का हिन्दी नाटकों पर प्रभाव
3. लोक नाट्य आधुनिक रंग–प्रयोग
4. भारतीय नाटकों में आधुनिकता,
5. भारतेन्दुयुगीन हिन्दी नाटक : प्रवृत्तियाँ और वैशिष्ट्य
6. प्रसादयुगीन हिन्दी नाटक : प्रवृत्तियाँ और वैशिष्ट्य
7. प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक : प्रवृत्तियाँ और वैशिष्ट्य
8. समकालीन नाटक और रंगमंच : प्रयोगशीलता एवं विरोधाभास
9. नाट्यविधा : आलोचना और अध्यापन के अंतर्विरोध
10. हिन्दी कहानी का रंगमंच, इक्कीसवीं सदी के नए नाटककार

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. दशरथ ओझा, हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली
2. नेमिचन्द्र जैन, आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच,
3. महेश आनन्द, देवेन्द्र राज अंकुर (सं.), रंगमंच के सिद्धांत, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
4. गिरीश रस्तोगी, नाटक तथा रंग–परिकल्पना, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. जयदेव तनेजा, आधुनिक भारतीय नाट्य विमर्श, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
6. गिरीश रस्तोगी, बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
7. देवेन्द्र राज अंकुर, हिन्दी कहानी का रंगमंच
8. रणवीर सिंह, पारसी थियेटर, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली

कोर्स : 2 वैकल्पिक : हिन्दी का कथेतर गद्य

इस पत्र को पढ़ने के उपरांत शोधार्थी हिन्दी के कथेतर गद्य की समृद्ध परम्परा से परिचित हो सकेंगे। समकालीन हिन्दी साहित्य में हाल के वर्षों में कथेतर गद्य की विधा ने अर्थपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराते हुए साहित्य की परिधि का विस्तार किया है। शोधार्थी कथेतर गद्य की विधाओं के अद्यतन विकास से अवगत हो

पाठ्य विषय :–

1. हिन्दी कथेतर गद्य का संक्षिप्त इतिहास
2. निबंध : भारत और यूरोप प्रतिश्रुति के क्षेत्र : निर्मल वर्मा
   त्रिशंकु : सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय'
3. डायरी : बोरुंदा डायरी : विजयदान देथा
   थलचर : कुमार अम्बुज
4. जीवनी : असहमति में उठा एक हाथ (रघुवीर सहाय) : विष्णु नागर
   राजकमल चौधरी की रचनादृष्टि : देवशंकर नवीन
5. यात्रा वृत्तान्त : वह भी कोई देस है महराज : अनिल यादव
   आजादी मेरा ब्राण्ड : अनुराधा बेनीवाल
6. आत्मकथा : मुर्दहिया : तुलसीराम
   एक कहानी यह भी : मन्नू भंडारी

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. भारत और यूरोप प्रतिश्रुति के क्षेत्र : निर्मल वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. त्रिशंकु : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
4. बोरुंदा डायरी : विजयदान देथा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
5. थलचर : कुमार अम्बुज, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
6. असहमति में उठा एक हाथ (रघुवीर सहाय की जीवनी) : विष्णु नागर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. राजकमल चौधरी की रचनादृष्टि : देवशंकर नवीन, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली
8. वह भी कोई देस है महराज : अनिल यादव, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
9. आजादी मेरा ब्राण्ड : अनुराधा बेनीवाल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
10. मुर्दहिया : तुलसीराम, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

कोर्स : 2 वैकल्पिक : अवधारणात्मक हिन्दी आलोचना

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी हिन्दी आलोचना में अवधारणाओं के विकास और उसकी महत्ता को समझ पायेंगे। अवधारणायें कैसे साहित्य के कथ्य और रुप को प्रभावित करती हैं, इसकी समझदारी अर्जित कर पायेंगे। यह पत्र उनमें आलोचनात्मक क्षमता के विकास की दिशा में विशेष उपयोगी होगा।

पाठ्य विषय :–

1. विचारधारा का प्रश्न और हिन्दी आलोचना, पक्षधरता और हिन्दी आलोचना
2. इतिहास और हिन्दी आलोचना, परम्पराओं का निर्माण और हिन्दी आलोचना
3. प्रसंग और हिन्दी आलोचना, प्रासंगिकता की अवधारणा और हिन्दी आलोचना
4. हिन्दी आलोचना और प्रतिमान, हिन्दी आलोचना की बहसें
5. हिन्दी आलोचना और सौन्दर्यशास्त्र, हिन्दी आलोचना की भाषा
6. हिन्दी आलोचना में उत्तर आधुनिकतावादी आग्रह
7. शोध प्रश्न और हिन्दी आलोचना

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. रेने वेलेक, आलोचना की धारणाएँ, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
2. क्रिस्टोफोर कोडवेल, विभ्रम और यथार्थ, राजकमल प्रकाशन
3. अन्स्र्ट फिशर, कला की जरुरत, राजकमल प्रकाशन
4. (सं॰) उदयभानु सिंह, हरभजन सिहं, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, साहित्य अध्ययन की दृष्टियाँ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
5. नामवर सिंह, विचारधारा और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
6. नामवर सिंह, इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. रामविलास शर्मा, परम्परा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
8. रामविलास शर्मा, आस्था और सौन्दर्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
9. डॉ॰ पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु', मार्क्सवादी समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना
10. निर्मला जैन व नित्यानंद तिवारी, इतिहास और आलोचना के वस्तुवादी सरोकार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
12. नगेन्द्र, शोध और सिद्धांत, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली

कोर्स : 2 वैकल्पिक : लोक साहित्य

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी साहित्य के एक अनिवार्य संदर्भ के बतौर लोक साहित्य के विभिन्न रुपों से परिचित हो सकेंगे। लोक साहित्य कैसे शिष्ट साहित्य को समृद्ध करता है इसकी समझदारी अर्जित कर अपने शोध को अर्थपूर्ण बना सकेंगे।

पाठ्य विषय :–

1. लोक साहित्य : परिभाषा एवं स्वरूप
2. लोक साहित्य के प्रमुख रुप : लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाटक, लोककला
3. लोक साहित्य का सामाजिक पक्ष
4. लोक और साहित्य का अंतःसंबंध
5. लोक में गल्प और यथार्थ का द्वन्द्व
6. लोक साहित्य संकलन, महत्त्व, चुनौतियाँ एवं संकलन के लिए आवश्यक सामग्री
7. लोक दृष्टि, लोक चेतना, लोक संस्कृति और लोक साहित्य

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हरिश्चन्द्र मिश्र (संपा॰), लोक साहित्य का लोकपक्ष सिद्धांत और व्यवहार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. डॉ॰ सुरेश गौतम, लोक साहित्य, संजय प्रकाशन, नयी दिल्ली
4. डॉ॰ शांति जैन, लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. बद्रीनारायण, लोक संस्कृति और इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. मोहन पाटिल, लोक साहित्य लेख आलेख, पद्मगंधा प्रकाशन
7. महावीर प्रसाद (सं॰), लोक संस्कृति : आयाम और परिप्रेक्ष्य, शंकर प्रकाशन
8. डॉ॰ श्यामपरमार, भारतीय लोक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
9. डॉ॰ शकुन्तला चौहान, लोक साहित्य विमर्श, प्रशान्त प्रकाशन
10. डॉ॰ सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान

कोर्स : 2 वैकल्पिक : तुलनात्मक साहित्य

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी तुलनात्मकता के सैद्धांतिक और अवधारणात्मक पक्षों से परिचित हो सकेंगे। शोध के लिए अनिवार्य तुलनात्मकता की प्रविधि का वे अपने शोध प्रविधि में कुशलता से अनुप्रयोग कर पायेंगे।

पाठ्य विषय :–

1. तुलनात्मक साहित्य : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
2. तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य
3. राष्ट्रीय साहित्य, विश्व साहित्य एवं तुलनात्मक साहित्य की दिशाएँ
4. तुलनात्मक साहित्य : अध्ययन की प्रविधि
5. तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका
6. तुलनात्मक साहित्य में तुलनात्मक आलोचना की भूमिका
7. तुलनात्मक साहित्य और भारतीय साहित्य की अवधारणा

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. इन्द्रनाथ चौधुरी, तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
2. इन्द्रनाथ चौधुरी, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली
3. डॉ नगेन्द्र, तुलनात्मक साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. कुलदीप सिंह, तुलनात्मक साहित्य : सिद्धांत और व्यवहार
5. हनुमान प्रसाद शुक्ल, तुलनात्मक साहित्य : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य, राजकमल प्रकाशन
6. सियाराम तिवारी, भारतीय साहित्य की पहचान, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. विष्णुदत्त राकेश, तुलनात्मक साहित्यशास्त्र, साहित्य सदन, देहरादून
8. अमर सिंह वधान (सं), तुलनात्मक साहित्य और शोध, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली
9. मनोहर शर्मा, लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा, रोशनलाल जैन एण्ड सन्स, जयपुर

कोर्स : 2 वैकल्पिक : भाषा विज्ञान एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी भाषा के अनेक आयामों से परिचित हो सकेंगे। यह पत्र एक साथ उन्हें भाषाविज्ञान, भाषा की प्रकार्यता और हिन्दी की सांवैधानिक स्थिति से अवगत हो सकेंगे। सकेंगे।

पाठ्य विषय :–

1. भाषा विज्ञान की परिभाषा
2. भारत के भाषा परिवार
3. विभिन्न भाषा वैज्ञानिकों का भाषा चिंतन फर्डिनांड सस्यूर, लियोनार्ड ब्लूमफील्ड, नोम चॉम्स्की
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी, परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रकार : कार्यालयी, वैज्ञानिक, व्यावसायिक, मीडिया
6. हिन्दी की सांवैधानिक स्थिति
7. प्रयोजनमूलक हिन्दी और अनुवाद

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी
2. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. रामविलास शर्मा, आर्य और द्रविड़ भाषा परिवारों का संबंध, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
4. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा ओर लिपि, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
5. डॉ. धर्मवीर, हिन्दी की आत्मा, समता प्रकाशन, शाहदरा, इलाहाबाद
6. भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान, किताब महल, दरियागंज
7. ब्लूमफील्ड, भाषा (हिन्दी अनुवाद) मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली
8. देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
9. दंगल झाल्टे, प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
10. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, प्रयोजनमूलक हिन्दी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
11. विजयपाल सिंह, प्रयोजनमूलक हिन्दी, हिन्दी बुक सेंटर, वाराणसी
12. विनोद गोदरे, प्रयोजनमूलक हिन्दी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

कोर्स : 2 वैकल्पिक : साहित्यिक मत एवं विमर्श

इस पत्र के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी साहित्य में अनुस्यूत विचारधारा, इतिहासदर्शन और सामाजिकता के ताने–बाने को समझ पायेंगे। साथ ही समकालीन साहित्यिक विमर्शों की दुनिया में प्रचलित विभिन्न मतवादों और वैचारिकी को समझ पायेंगे।

पाठ्य विषय :–

1. साहित्य और विचारधारा
2. साहित्य का इतिहासदर्शन
3. साहित्य का समाजशास्त्र
4. आधुनिक हिन्दी साहित्य से संबंधित मतवाद : गाँधीवाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद,
5. आधुनिकतावाद और उत्तर आधुनिकतावाद और भूमंडलीकरण
6. समकालीन अस्मितामूलक विमर्श : दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और आदिवासी विमर्श

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. नामवर सिंह, विचारधारा और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
2. नामवर सिंह, वाद विवाद और संवाद, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. नामवर सिंह, इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
4. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य और इतिहासदृष्टि, अरूणोदय प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली
5. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला, हरियाणा
6. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. रेखा अवस्थी, प्रगतिवाद और समानांतर साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
8. गंगा प्रसाद विमल, आधुनिकता साहित्य के संदर्भ में, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली
9. केशवचन्द्र वर्मा, परिमल : स्मृतियाँ और दस्तावेज, प्रदीपन प्रकाशन एकांश, इलाहाबाद
10. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, उत्तर आधुनिकता बहुआयामी सन्दर्भ, लोकभारती, इलाहाबाद
11. न्गुगी वा थ्योंगो, भाषा संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता, (हिन्दी अनुवाद, आनन्दस्वरूप वर्मा), सारांश प्रकाशन
12. न्गुगी वा थ्योंगो, औपनिवेशिकता से मुक्ति, ग्रंथ शिल्पी, नयी दिल्ली
13. प्रणय कृष्ण, उत्तर औपनिवेशिकता के स्त्रोत और हिन्दी साहित्य, हिन्दी परिषद् प्रकाशन, इलाहाबाद
14. टेरी ईगल्टन, मार्क्सवाद और साहित्यालोचन, (वैभव सिंह हिन्दी अनु), आधार प्रकाशन, पंचकूला
15. बजरंग बिहारी तिवारी, दलित साहित्य एक अंर्तयात्रा, नवारुण प्रकाशन, गाजियाबाद
16. किंगसन सिंह पटेल, नारीवादी आलोचना, अनन्य प्रकाशन, नयी दिल्ली,
17. निवेदिता मेनन, नारीवादी निगाह से, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, सुजाता

कोर्स – 3 पुस्तक समीक्षा एवं शोध प्रस्तावना प्रारूप प्रस्तुतिकरण

1. शोध पत्र प्रस्तुतिकरण
2. आलोचनात्मक/शोधात्मक कृति (विगत 10 वर्षों में प्रकाशित) की समीक्षा
3. शोध विषय से संबंधित शोध प्रारूप (Synopsis) प्रस्तुत करना होगा।